मालवा फर्स्ट

MALWA FIRST

स्वाभिमान ही हमारा अभिमान है

PRGI Reg. No. MPHIN/2023/90883

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा

नीमच, बुधवार

10 सितम्बर 2025

वर्ष - 03, अंक - 19 - मूल्य 02 रूपए

पृष्ठ - 04

Periodicity- Weekly

E-mail: nmh.pawan@gmail.com

Contact: 9407423966, 8770664866

Commodity: Gold 99,735 Silver 97,000 Crude Oil 5,963 Natural Gas 302.20 Aluminium 232.30 Copper 827.35

मोहन कैबिनेट ने लिए बड़े फैसले...

नगरीय निकाय चुनाव होंगे डायरेक्ट, स्क्रैप पॉलिसी को मिली मंजूरी

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में कई अहम प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। बैठक का सबसे बड़ा निर्णय नगरीय निकायों में अध्यक्ष पद के चुनाव को लेकर रहा। अब नगर पालिका और नगर परिषद अध्यक्षों का चुनाव सीधे मतदाताओं द्वारा किया जाएगा, जबकि पहले यह प्रक्रिया पार्षदों के माध्यम से होती थी।

अध्यक्ष पद पर अविश्वास प्रस्ताव की नई व्यवस्था

बैठक में तय किया गया कि अध्यक्ष को पद से हटाने के लिए अब तीन-चौथाई पार्षदों को अविश्वास प्रस्ताव लाना होगा। इसके बाद राज्य निर्वाचन आयोग 'खाली कुर्सी-भरी कुर्सी' चुनाव कराएगा। इसमें जनता ही यह निर्णय करेगी कि अध्यक्ष पद पर रहेंगे या हटेंगे।

वाहन स्क्रैप पॉलिसी को मंजूरी – कैबिनेट ने वाहन स्क्रैप पॉलिसी को भी स्वीकृति दी। अब वाहन स्क्रैप करने वाली संस्थाओं को उद्योग का दर्जा मिलेगा। इन्हें वही प्रोत्साहन दिए जाएंगे, जो अन्य उद्योगों को मिलते हैं। वाहन स्क्रैप कराने वाले व्यक्तियों को नया वाहन खरीदते समय मोटरयान कर में 50% की छूट प्रदान की जाएगी।

सेवा सप्ताह और पीएम मोदी का दौरा – बैठक से पहले मुख्यमंत्री ने मंत्रियों को निर्देश दिए कि 17 सितंबर से शुरू होने वाले सेवा सप्ताह में ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता पर विशेष ध्यान दें और आमजन से मिलकर कार्य करें। इसी दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी धार जिले के बदनावर में पीएम मित्रा का भूमिपूजन और अन्य कार्यक्रमों की शुरुआत करेंगे।

प्रदेश में किसान और निजी व्यक्ति भी बना सकेंगे टाउनशिप, लैंड पुलिंग का नियम लागू

भोपाल। मध्य प्रदेश में अब शहरों के आसपास किसान, किसानों के समूह या निजी व्यक्ति लैंड पुलिंग करके टाउनशिप बना सकेंगे। ग्रीन बेल्ट जैसे जैसे प्रविधानों से छूट मिलेगी।

कुल क्षेत्र के 15 प्रतिशत क्षेत्र में ईडब्ल्यूएस, एलआईजी आवास बनाने होंगे। इसके लिए भूमि दिलाने के लिए डेवलपर या विकासकर्ता विकास प्राधिकरण या अन्य एजेंसियों से अनुरोध कर सकेंगे। वह आपसी सहमति के आधार पर भूमि दिलाने में भूमिका निभाएगी।

अगर परियोजना क्षेत्र में सरकारी भूमि आती है तो अधिकतम 8 हेक्टेयर सीमा की छूट दी जा सकेगी। इसमें लैंड पुलिंग का प्रविधान रखा गया है। नियम सरल बनाए गए हैं।

यह प्रविधान विकास प्राधिकरण सहित अन्य हाउसिंग प्रोजेक्ट करने वाली एजेंसियों के लिए भी लागू होंगे। मध्य प्रदेश नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने मध्य प्रदेश एकीकृत टाउनशिप नीति-2025 के नियम जारी कर दिए हैं। एकीकृत टाउनशिप नीति के तहत किसान के साथ मिलकर टाउनशिप बनाने के लिए सरकार प्रोत्साहित करेगी। महाराष्ट्र और गुजरात में यह व्यवस्था पहले से है। बता दें कि अभी तक बिल्डर और कालोनाइजर टाउनशिप का विकास करते थे। नए नियम जारी होने से अब कोई भी या व्यक्तियों का समूह किसान के साथ मिलकर टाउनशिप बना सकेगा।

एकीकृत टाउनशिप नीति में शहरों का होगा नियोजित विकास – एकीकृत टाउनशिप नीति के तहत स्थानीय निकाय सीमा या योजना क्षेत्र के भीतर पांच लाख से कम आबादी वाले शहरों के लिए भूमि की न्यूनतम अर्हता 10 हेक्टेयर और पांच लाख से अधिक आबादी वाले शहरों के लिए भूमि की न्यूनतम अर्हता 20 आवश्यक होगी तथा मार्ग चौड़ाई 24.0 मीटर से कम न हो। 40 हेक्टेयर और उससे अधिक क्षेत्र वाले बड़ी टाउनशिप के लिए मार्ग की न्यूनतम चौड़ाई 30.0 मीटर आवश्यक होगी। कुल क्षेत्र के 15 प्रतिशत क्षेत्र में ईडब्ल्यूएस, एलआइजी आवास बनाने होंगे। किफायती आवास बनाने पर अलग से अनुदान मिलेगा। लैंड पूलिंग के माध्यम से सार्वजनिक और निजी भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाएगा।

15 महीने में तैयार होगा, 2158 एकड़ में बनेगा पार्क

जन्मदिन पर मोदी मप्र को देंगे तोहफा धार में मित्र पार्क का करेंगे भूमिपूजन

भोपाल । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 17 सितंबर को अपने जन्मदिन पर धार जिले के बदनावर (भैंसोला गांव) में पीएम मित्र पार्क का भूमिपूजन करेंगे। यह देश में प्रस्तावित 7 पीएम मित्र पार्कों में से मध्यप्रदेश को मिला एकमात्र प्रोजेक्ट है। इसका उद्देश्य टेक्सटाइल सेक्टर को मजबूत करना और निवेश आकर्षित करना है।

पीएम इस अवसर पर पार्क का उद्घाटन करेंगे और निवेशकों को योजनाओं और जमीन का अवलोकन कराएंगे। पार्क में कॉमन प्रोसेसिंग फैसिलिटी, लॉजिस्टिक्स सपोर्ट, 24x7 बिजली-पानी की आपूर्ति और आधुनिक कंट्रोल कमांड सेंटर जैसी सुविधाएं होंगी। 12,500 करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव पहले ही मिल चुके हैं...

निवेश कहां से आएगा? – दिल्ली में प्रोजेक्ट संबंधित आयोजन में ट्राइडेंट, अरविंद मिल्स और बीएसएल जैसे समूहों ने कुल 12,500 करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव दिए हैं। इनमें 430 एकड़ जमीन शामिल है। अन्य निवेशकों के लिए 11 सितंबर तक एमपीआईडीसी का लिंक सक्रिय रहेगा, जिससे वे भी प्रस्ताव और जमीन आवंटन के लिए आवेदन कर सकेंगे।

सरकार की तैयारी – इंटरनल इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए 773 करोड़ रुपए के टेंडर जारी किए जा चुके हैं। भूमिपूजन के दौरान निवेशकों को जमीन का आवंटन भी किया जाएगा।

विकास कार्यों को लेकर मुख्यमंत्री से मिले नपाध्यक्ष स्वाति चौपड़ा व विधायक दिलीपसिंह परिहार

नीमच 8 सितम्बर 25 (निप्र)। नीमच नगर पालिका अध्यक्ष स्वाति चोपड़ा व विधायक दिलीप सिंह परिहार ने सोमवार को मुख्यमंत्री मोहन सिंह यादव से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने नीमच के समग्र विकास के लिए विशेष निधि की मांग रखी।

उन्होंने कहा कि निधि उपलब्ध होने पर शहर की आधारभूत सुविधाओं में तेजी से सुधार होगा और नागरिकों को बेहतर सेवाएँ मिलेंगी। मुलाकात में सड़क निर्माण, सौंदर्याकरण और मूलभूत सुविधाओं से संबंधित प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए। साथ ही पूर्व में स्वीकृत कार्यों के भूमिपूजन एवं लोकार्पण के लिए मुख्यमंत्री को नीमच की लालधरा आने का आमंत्रण भी दिया गया । विधायक दिलीपसिंह परिहार ने नीमच जिले में अतिवृष्टि व पीले मोजक रोग से सोयाबीन की फसल को हुए नुकसान के लिए सर्वे मुआवजा का मांग पत्र सौंपा ।

मंदसौर में मौसमी बीमारियों का प्रकोप....

एक दिन में जिला अस्पताल पहुंचे 1000 से ज्यादा मरीज, हैजा, डायरिया, टाइफाइड के मरीज बढ़े

मन्दसौर । मौसमी बीमारियों का प्रकोप बढ़ गया है। जिला अस्पताल में सोमवार को 1000 से अधिक मरीज इलाज के लिए पहुंचे। जिला चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. गोविंद सिंह चौहान ने वर्षा ऋतु में बढ़ने वाली बीमारियों के बारे में जानकारी दी।

डॉ. चौहान ने बताया कि इस मौसम में खराब पानी और मच्छर से फैलने वाली बीमारियां बढ़ जाती हैं। दूषित जल और अस्वच्छता से टाइफाइड, पीलिया, डायरिया, पेचिश और हैजा फैल रहे हैं। साथ ही दस्त, आंखों का संक्रमण और मलेरिया-डेंगू के मामले भी सामने आ रहे हैं।

दस्त से बचाव के लिए शुद्ध पेयजल का सेवन करें। खाने से पहले और शौच के बाद हाथ धोएं। सड़े-गले फलों से दूर रहें। भोजन को मक्खियों से बचाएं। दस्त होने पर चिकित्सक की सलाह से ओआरएस और जिंक सल्फेट लें।

आंखों के संक्रमण से बचने के लिए संक्रमित व्यक्ति की वस्तुओं का उपयोग न करें। ठंडे पानी से चेहरा धोएं। अलग तौलिया-रूमाल का इस्तेमाल करें। धूप का चश्मा पहनें। मलेरिया और डेंगू से बचाव के लिए घर के आसपास पानी जमा न होने दें। कूलर, गमले और फ्रिज की ट्रे को हफ्ते में एक बार साफ करें। मच्छरदानी का उपयोग करें। जरूरत पड़ने पर कीटनाशक का छिड़काव करवाएं।

सीएमएचओ ने बताया कि स्वच्छता और सतर्कता से इन बीमारियों से बचा जा सकता है। स्वास्थ्य समस्या होने पर तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र या डॉक्टर से संपर्क करें।

एक्टर दर्शन ने जेल में जहर देने की गुहार लगाई

बेंगलुरू । रेणुकास्वामी मर्डर केस में जेल में बंद कन्नड़ एक्टर दर्शन ने जेल में जहर देने की गुहार लगाई है। दर्शन मंगलवार को 64वीं सिटी सिविल एवं सत्र न्यायालय में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेश हुए थे। उन्होंने कोर्ट से कहा कि उनके लिए अब जेल के अंदर के हालात सहना मुश्किल है। दर्शन ने कहा कि जेल में बाहर निकलने की इजाजत नहीं होने के कारण मैंने कई दिनों से सूरज की रोशनी नहीं देखी है। एक्टर ने कहा, 'मेरे हाथों में फंगस लग गया है। मेरे कपड़ों से बदबू आती है। मैं अब ऐसे नहीं जी सकता। प्लीज, मुझे जहर दे दो। यहां जिंदगी असहनीय हो गई है। मुझे जेल में गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। दर्शन की अपील पर जज ने कहा कि ऐसी चीजें नहीं की जा सकतीं। यह संभव नहीं है। कोर्ट ने मामले की सुनवाई 19 सितंबर तक स्थगित कर दी। दर्शन ने बल्लारी जेल में ट्रांसफर करने और बिस्तर-गद्दे की मांग को लेकर भी अलग याचिका लगाई है।

जावद क्षेत्र के युवाओं के लिए ए.आई.के माध्यम से रोजगार सृजन की अनुकरणीय पहल प्रारंभ

जावद क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों में ए.आई. शिक्षा के प्रोजेक्ट दीप का हुआ शुभारंभ

जावद । पूर्व मंत्री एवं जावद क्षेत्र के विधायक श्री ओमप्रकाश सखलेचा के प्रयासों से जावद क्षेत्र में अब शिक्षा के साथ, स्वास्थ्य एवं कृषि में AI Technology के इंटीग्रेशन के नवाचारों का शुभारंभ 9 सितंबर 2025 को कृषि उपज मंडी, जावद में आयोजित कार्यक्रम किया गया है। विधायक श्री ओमप्रकाश सखलेचा के नेतृत्व में शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि नवाचारों के क्रम में प्रोजेक्ट दीप – 1500 बच्चों के लिए कौशल प्रशिक्षण,हेल्थ ऐप – फेस स्कैनिंग से 14 प्रकार के स्वास्थ्य परीक्षण,सेवा से प्रसन्नता अभियान – द्वितीय चरण,कृषि उपज मंडी में डोम का लोकार्पण, एवं 1.25 करोड़ की लागत से किसान भवन का भूमिपूजन किया भी किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व राज्यसभा सांसद श्री विनय सहस्त्रबुद्धे वर्चुअली मौजूद रहे।

इस मौके पर एवं डॉ. विजय भटकर (सुपर कंप्यूटर के जनक), जावद विधायक श्री ओमप्रकाश सखलेचा, विधायक नीमच श्री दिलीप सिह परिहार, विधायक मनासा श्री अनिरूद्ध मारू, जि.प.अध्यक्ष श्री सज्जनसिह चौहान, मंदसौर के पूर्व विधायक श्री यशपाल सिह सिसोदिया, सभी नगरीय निकायों के अध्यक्ष एवं अन्य जनप्रतिनिधिगण मंचासीन थे।

जावद होगा कामयाब ए.आई.और टेक्नॉलाजी के साथ कार्यक्रम को वर्चुअली सम्बोधित करते हुए सुप्रसिद्ध चिंतक विचारक एवं पूर्व राज्यसभा सांसद श्री विनय सहस्त्रबुद्धे ने अपने उदबोधन में कहा, कि विधायक श्री सखलेचा जावद क्षेत्र के युवाओं को मार्डन टेक्नॉलॉजी से जोड़ने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं। उन्होने कहा, कि ए.आई.के माध्यम से युवाओं को रोजगार से जोड़ने की अनुकरणीय पहल जावद क्षेत्र में की जा रही है। यह सराहनीय है। आई.टी. के साथ ए.आई. को भी ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुचाने का कार्य जावद क्षेत्र में किया जा रहा है। ए.आई.सूचना के सागर के रूप में कार्य करता है। विधायक श्री ओमप्रकाश सखलेचा ने अपने स्वागत भाषण में कहा, कि जावद वि.स.क्षेत्र के शासकीय स्कूलों में विद्यार्थियों को इसी माह से ए.आई.की शिक्षा दी जाएगी। जावद के 30 सरकारी स्कूलों में विशेष आई.सी.टी.लैब भी तैयार की गई हैं। उन्होने कहा, कि वे लंबे समय से बच्चों को आधुनिक शिक्षा दिलाने के लिए प्रयासरत हैं।

इसी क्रम में ए.आई. शिक्षा के लिए प्रसिद्ध कम्प्यूटर वैज्ञानिक, आई.टी.लीडर पद्मश्री श्री विजय भटकर की महाराष्ट्र नॉलेज ऑफ कॉरपोरेशन के साथ मिलकर विशेष कोर्स तैयार किए हैं। श्री सखलेचा ने कहा, कि दीप प्रोजेक्ट के तहत सभी विद्यालयों के कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थी प्रवेश ले सकेंगे। प्रथम चरण में 1500 बच्चों को शिक्षा देने की योजना है। स्कूली समय के बाद दिन में दो घंटे विशेष क्लासेस लगेंगी। इसमें बच्चों को पहले के 6 माह बेसिक कम्प्यूटर का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके बाद अगले छह माह में विषय विशेष की शिक्षा दी जाएगी। इसमें 150 करीब कोर्स तैयार किए हैं। इसमें एआई से हेल्थ सेक्टर, एग्रीकल्चर, रोजगारमूलक कोर्स हैं। कार्यक्रम को मंचासीन अतिथियों ने भी संबोधित किया। प्रारंभ में अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विधायक श्री सखलेचा , श्री सजीव शर्मा, श्री अशोक सोनी, श्री सचिव गोखरू, श्री श्याम काबरा, श्री अर्जुन माली, श्री सोहनलाल माली, सूचित सोनी आदि ने अतिथियों का पगड़ी पहनाकर एवं पुष्पहारों से स्वागत किया। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री नवलसिह सिसोदिया, एसडीएम श्रीमती प्रीती संघवी, तहसीलदार श्री नवीन गर्ग एवं विभिन्न विभागों के जिला अधिकारी, कर्मचारी, शिक्षकगण, जनप्रतिनिधिगण, पार्षदगण, पत्रकारगण एवं बड़ी संख्या में विभिन्न विद्यालयों के हजारों की संख्या में छात्र-छात्राएं तथा बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

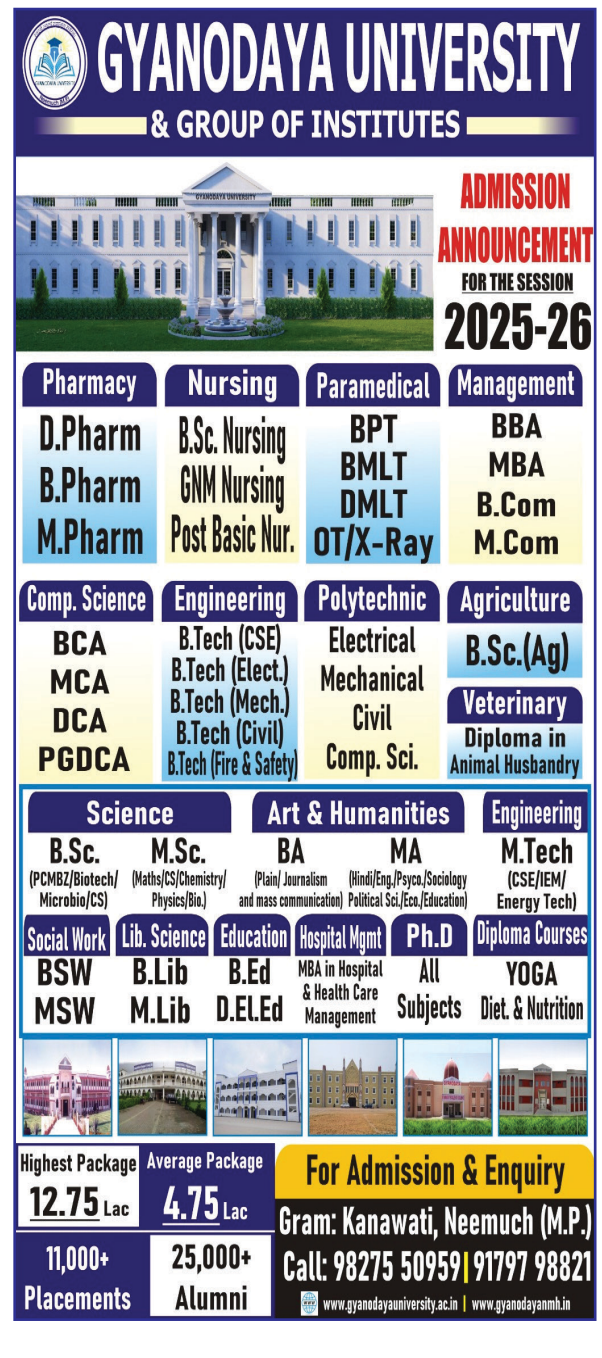

Email: nmh.pawan@gmail.com
Contact: 9407423966, 8770664886

मातृत्व का अपमानः बिहार की राजनीति पर असर

ललित गर्ग

बिहार विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आते जा रहे हैं, विपक्षी नेताओं की जुबान फिसलती जा रही है, वे राजनीति से इतर नेताओं की निजी जिंदगियों में तांक-झांक वाले, धार्मिक भावनाओं को भड़काने वाले ऐसे बोल बोल रहे हैं, जो न सिर्फ आपत्तिजनक हैं, बल्कि राष्ट्र-तोड़क एवं जनभावनाओं को आहत करने वाले है। प्रधानमंत्री मोदी को नीचा दिखाने के मकसद से ये नेता मर्यादा, शालीनता और नैतिकता की रेखाएं पार करते नजर आए हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की माताजी के संबंध में कांग्रेस और राजद के मंच से जो अभद्र व अशालीन शब्द कहे गए, उसने न केवल राजनीतिक वातावरण को कलंकित किया है, बल्कि पूरे देश की संवेदनाओं को भी आहत किया है। भारत में माँ केवल एक परिवार की सदस्य नहीं होती, वह मातृत्व का प्रतीक है, करुणा और संस्कार की धारा है, जीवन की प्रथम शिक्षिका है। किसी भी माँ के लिए अपमानजनक टिप्पणी वस्तुतः संपूर्ण मातृत्व का अपमान है। इसलिए जब किसी दल के नेता राजनीतिक आग्रहों एवं दुराग्रहों के चलते प्रधानमंत्री की माताजी को अपशब्द कहते हैं, तो यह प्रधानमंत्री पर नहीं बल्कि हर उस भारतीय पर चोट करता है, जिसने अपनी माँ को श्रद्धा और सम्मान के उच्चतम स्थान पर रखा है, यह भारतीय संस्कृति एवं तहजीब का भी अपमान है। यही कारण है कि यह घटना केवल राजनीतिक विवाद नहीं रही, यह एक सामाजिक-नैतिक प्रश्न बन गई है। नेताओं को यह बात समझनी चाहिए कि सही तरीके से बोले गए शब्दों में लोगों को जोड़ने की ताकत होती है, जबकि गलत भाषा एवं बोल का इस्तेमाल राजनीतिक धरातल को कमजोर करता है।

बिहार विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आते जा रहे हैं, विपक्षी नेताओं की जुबान फिसलती जा रही है, वे राजनीति से इतर नेताओं की निजी जिंदगियों में तांक-झांक वाले, धार्मिक भावनाओं को भड़काने वाले ऐसे बोल बोल रहे हैं, जो न सिर्फ आपत्तिजनक हैं, बल्कि राष्ट्र-तोड़क एवं जनभावनाओं को आहत करने वाले है। प्रधानमंत्री मोदी को नीचा दिखाने के मकसद से वे नेता मर्यादा, शालीनता और नैतिकता की रेखाएं पार करते नजर आए हैं। गलत का विरोध खुलकर हो, राष्ट्र-निर्माण के लिये अपनी बात कही जाये, अपने राजनीतिक मुद्दों को भी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाये, लेकिन गलत, उच्छृंखल एवं अनुशासनहीन बयानों की राजनीति से बचना चाहिए। बड़ा सवाल है कि एक ऊर्जावान एवं दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में क्या वाकई अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल औचित्यपूर्ण है? लोकतंत्र में असहमति होना स्वाभाविक है। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में सरकार की नीतियों की आलोचना करना विपक्ष का अधिकार ही नहीं, उसका दायित्व भी है। परंतु आलोचना और अभद्रता में बहुत बड़ा अंतर है। जब राजनीतिक संवाद विचारों, नीतियों और कार्यक्रमों से हटकर व्यक्तिगत और पारिवारिक अपमान तक पहुँच जाता है, तब लोकतंत्र की आत्मा पर आघात होता है। विपक्ष को सरकार की योजनाओं, उसकी कमियों या विफलताओं पर सवाल उठाने चाहिए, लेकिन यदि वे प्रधानमंत्री की माँ को निशाना बनाएंगे, तो जनता इसे राजनीतिक परिपक्वता की कमी, विकृत राजनीति और हताशा का प्रतीक ही मानेगी।

इतिहास साक्षी है कि जब-जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर गाली-गलौज की गई है, तब-तब यह उनके लिए सहानुभूति और समर्थन का कारण बना है। 2014 के लोकसभा चुनाव के समय से ही अनेक अवसर आए, जब कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दलों ने मोदी पर अशालीन एवं अभद्र टिप्पणियां की है लेकिन विपक्षी नेताओं ने अब सारी हदें लांघते हुए उन पर राजनीतिक छिद्रान्वेषण से हटकर व्यक्तिगत हमले कर-के, उनकी पृष्ठभूमि और उनके परिवार को लेकर अपमानजनक शब्द कह कर राजनीतिक मर्यादाओं का हनन किया है। लेकिन हर बार जनता ने इसका उत्तर मोदी के पक्ष में समर्थन देकर दिया। 2019 के आम चुनाव में भी जब अपशब्दों की बाढ़ आई, तो मोदी और भी सशक्त होकर सामने आए। जनता ने मानो यह संदेश दे दिया कि जो व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत गरिमा और पारिवारिक मर्यादा का स्वयं उत्तर नहीं देता, बल्कि मौन रहकर केवल अपने राष्ट्र विकास के कार्यों से जवाब देता है, वही उनकी सहानुभूति का अधिकारी है। यही कारण है कि मोदी पर गाली की हर चोट उनके समर्थन को और व्यापक बना देती है। मोदी को कोई भी गाली कभी भी कमजोर नहीं कर सकती।

भारतीय मतदाता भावनाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। वह केवल तर्क और आँकड़ों से प्रभावित नहीं होता, बल्कि उसके निर्णय में संवेदनाएँ और संस्कार भी बराबरी से भूमिका निभाते हैं। प्रधानमंत्री की माता जी पर की गई टिप्पणी ने इस संवेदनशीलता को झकझोर दिया है। भारतीय समाज के लिए माँ केवल परिवार की धुरी नहीं है, बल्कि राष्ट्र की आत्मा का प्रतीक भी है। इसीलिए जब माँ पर आघात हुआ, तो जनता ने इसे मोदी के परिवार का नहीं बल्कि अपने परिवार का अपमान माना। यह भावनात्मक जुड़ाव विपक्ष की रणनीति को उल्टा कर देता है और मोदी के लिए जनसमर्थन का कारण बन जाता है। भारतीय राजनीति में स्तरहीन, हल्की और सस्ती बातें कहने का चलन काफी समय से है। लेकिन पिछले दो दशकों में यह वीभत्स रूप धारण कर चुका है। एक समय राम मनोहर लोहिया ने इंदिरा गांधी को केवल गूंगी गुड़िया कहा था तो काफी विवाद हुआ और बड़ी तादाद में लोगों ने लोहिया का विरोध किया। लेकिन आज कांग्रेस मोदी के खिलाफ काफी कुछ बोल चुकी हैं, कभी रावण तो कभी नीच, कातिल, शैतान, मौत का सौदागर जैसे शब्दों का खुलेआम इस्तेमाल किया है। जिसमें उनकी हताशा साफ झलकती है। कड़वे एवं गलत बयानी के मामले में कांग्रेसियों की तो लम्बी सूची है। चाहे सानिया हो या राहुल, चाहे वह अधीर रंजन हों या दिग्विजय सिंह या फिर संजय निरुपम, खड़गे और प्रियंका गांधी। इन नेताओं ने बेहद हल्के शब्दों का इस्तेमाल किया, जिससे उनकी खीझ एवं बौखलाहट का पता चलता है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि मोदी और उनकी पार्टी ने ऐसे अमर्यादित शब्दों और टिप्पणियों को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल किया। नरेन्द्र मोदी को चाय वाला कहकर उनका उपहास उड़ाने वाले विपक्षियों को तो उन्होंने अपने कार्यों और उपलब्धियों से आईना दिखा दिया। आज चाय वाला शब्द मेहनतकश लोगों के सम्मान का प्रतीक बन गया है।

बिहार के चुनावी परिदृश्य पर इस घटना का गहरा असर पड़ना स्वाभाविक है। वहाँ की राजनीति पहले से ही जातीय समीकरणों, आर्थिक पिछड़ेपन और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों में उलझी हुई है। विपक्ष अपने लिए जगह बनाने के लिए संघर्षरत है, परंतु वह जनता को कोई ठोस और विश्वसनीय विकल्प देने में असफल रहा है। ऐसे में जब उसके नेता अभद्रता पर उतर आते हैं, तो जनता का विश्वास और भी कम हो जाता है। वह सोचने लगती है कि जिन नेताओं के पास शब्दों की गरिमा और तर्क का बल नहीं है, वे शासन और प्रशासन की मर्यादा कैसे संभालेंगे? इसीलिए बिहार की जनता ऐसी अभद्रता का समर्थन नहीं करेगी और इसका सीधा असर विपक्ष की चुनावी संभावनाओं पर पड़ेगा। यह भी एक गहन प्रश्न है कि विपक्ष आखिर किस हद तक गिरेगा? क्या लोकतंत्र अब केवल गाली-गलौज और व्यक्तिगत अपमान तक सीमित रह जाएगा? क्या राजनीति में विचारों और सिद्धांतों की जगह अब विकारों और अशालीनता ने ले ली है? यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। प्रधानमंत्री मोदी पर गाली-गलौज की हर घटना उनके व्यक्तित्व को और दृढ़ बनाती है। वे स्वयं बार-बार कहते रहे हैं कि उन्हें जितनी गालियाँ मिलेंगी, वे उतनी ही शक्ति से देश सेवा में लगेंगे। उनके इस धैर्य और संयम ने उन्हें जनता के बीच एक अलग पहचान दी है। जनता यह अनुभव करती है कि जो व्यक्ति व्यक्तिगत अपमान को भी सह लेता है, लेकिन जनता की सेवा से विचलित नहीं होता, वही सच्चा नेतृत्वकर्ता है। यही कारण है कि उनके विरोधियों की अभद्रता अंततः उन्हीं पर भारी पड़ती है। विपक्ष को यह समझना होगा कि लोकतंत्र में सफलता केवल आलोचना से नहीं मिलती, बल्कि वैकल्पिक नीतियों और रचनात्मक दृष्टि से मिलती है। केवल मोदी विरोध करना ही राजनीति का उद्देश्य नहीं हो सकता। जनता को चाहिए कि विपक्ष विकास की कोई ठोस रोजना प्रस्तुत करे, रोजगार और शिक्षा की स्थिति सुधारने का मार्ग दिखाए, स्वास्थ्य और किसान समस्याओं पर गंभीरता से बात करे। यदि वे यह सब नहीं कर सकते और केवल गाली-गलौज की राजनीति करेंगे, तो उनका हश्र वही होगा जो बार-बार होता आया है। जनता उन्हें नकार देगी और उनके अपशब्द मोदी के लिए समर्थन की नई ऊर्जा बनेंगे। यदि विपक्ष अपनी भाषा और व्यवहार पर संयम नहीं रखेगा, तो न केवल उसकी साख गिरेगी बल्कि लोकतंत्र की प्रतिष्ठा भी आहत होगी।

संपादकीय

जीएसटी में सुधार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जीएसटी व्यवस्था में किए गए व्यापक सुधारों (जीएसटी 2.0) को राष्ट्र के लिए समर्थन और वृद्धि को 'दोहरी खुराक' करार देते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि आत्मनिर्भर भारत के लिए अगली पीढ़ी के सुधारों की श्रृंखला अब नहीं थमेगी। राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार विजेताओं के साथसंवाद के दौरान कहा कि उन्होंने 15 अगस्त को लाल किले से वादा किया था कि दिवाली और छठ पूजा से पहले देशवासियों को 'दोहरा धमाका' मिलेगा। गौरतलब है कि जीएसटी परिषद की बुधवार को हुई बैठक में अब से सिर्फ पांच और 18 फीसद की दो कर दरें रखने का फैसला किया गया जबकि विलासिता एवं अहितकर उत्पादों को 40 फीसद के दायरे में रखा गया है। जीएसटी में यह राहत 22 सितम्बर से मिलना शुरू हो जाएगी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हमारी सरकार का लक्ष्य है कि आम लोगों की जेब में अधिक पैसा बचे और उनका जीवन बेहतर बने। दावा किया जा रहा है कि नये सुधारों से कर प्रणाली सरल होगी, जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा, खपत एवं वृद्धि को बढ़ावा मिलेगा, कारोबारी सुगमता बढ़ेगी जिससे निवेश और रोजगार सृजन को प्रोत्साहन मिलेगा तथा विकसित भारत के लिए सहकारी संघवाद को मजबूती मिलेगी। हालांकि कांग्रेस और कुछ अन्य विपक्षी दलों ने दावा किया है कि इसे लागू करने में देर हो गई है। हालांकि नये सुधारों का स्वागत किया जा रहा है, लेकिन इस तरफ ध्यान जरूर खींचा जा रहा है कि जीएसटी का मौजूदा डिजाइन और कई दरें होनी ही नहीं चाहिए थीं। कांग्रेस का कहना है कि उसने 2019 और 2024 के लोक सभा चुनावों के अपने घोषणापत्र में तर्कसंगत कर व्यवस्था के साथ जीएसटी 2.0 की मांग की थी, लेकिन मोदी सरकार ने एक राष्ट्र, एक कर को एक राष्ट्र, नौ कर बना दिया। बहरहाल, जीएसटी में नये सुधार के खिलाफ बोलने के लिए विपक्ष के पास कुछ ज्यादा नहीं है। सच तो यह है कि विपक्ष दुविधा में है कि जीएसटी में बदलाव पर क्या कहे। कर सरलीकरण के लिहाज से ही नहीं, बल्कि ट्रंप टैरिफ के असर को कम करने के मद्देनजर भी यह सुधार जरूरी था। निर्यात मोर्चे पर भारतीय उत्पादों को ट्रंप टैरिफ के चलते झटका मिलना तय है। घरेलू मांग को मजबूत बनाए रख कर ट्रंप टैरिफ के असर को कम से कम किया जा सकता है। जीएसटी में यह सुधार यकीनन आर्थिक तकाजों को पूरा करने वाला स्वागतयोग्य कदम कहा जा सकता है।

चिंतन-मनन

शांति के लिए संतुलन जरूरी है...

अति हमेशा नुकसान दायक है। यह नियम अच्छी और बुरी दोनों आदतों पर लागू होता है। ऋषि-मुनियों ने अति को वर्जित ही बताया है। बुद्ध ने एक शब्द दिया था मंझिम मग्ग यानी मध्यम मार्ग। जीवन का यह संतुलन उन्हें एक दिन वह सब दिला गया जिसके लिए उनकी पूरी तपस्या थी। अपनी बोध प्राप्त की अवस्था में उनसे एक प्रश्न पूछा गया था जिसका उन्होंने बड़ा सुंदर उत्तर दिया था। किसी का प्रश्न था उनसे अब आपको क्या मिला? क्या वह प्राप्त हो गया जिसके लिए आपके सारे प्रयास थे? बुद्ध ने कहा- नया कुछ नहीं मिला, जो कुछ मेरे पास पहले से था, पाया ही हुआ था, पूर्व उपलब्ध था, उसका ज्ञान हो गया, पता चल गया उसका। वह दौलत अपने ही भीतर थी हम बाहर ढूंढ रहे थे।

जिसके कारण बाहर निकला, वो तो मेरे भीतर निकला। हम दो भूलें कर जाते हैं या तो बिल्कुल बाहर संसार पर टिक जाते हैं या एकदम भीतर उतर जाते हैं। ये अतिवें हमारे लिए हमारे अध्यात्म की दुश्मन बन जाती हैं। आचार्य श्रीराम शर्मा संसार में संतुलन से चलने के लिए एक अच्छा उदाहरण बताया करते थे। दुनिया में ऐसे चलो जैसे पानी में हाथी चलता है। हाथी जानता है पानी में जल्दबाजी करूंगा तो कीचड़ या गड्ढे में गिर सकता हूं। लिहाजा आगे और पीछे के पैर रखने में वह गजब का संतुलन बनाता है। बस, ऐसा ही संतुलन हमें बाहर और भीतर की यात्रा में रखना होगा। जैसे ही हम संतुलन में आते हैं हमारी अंतर दृष्टि स्पष्ट हो जाती है और हम स्वयं को पहचान जाते हैं। स्वयं को जानते ही परमात्मा दिख जाता है। भगवान होना नहीं पड़ता, बस यह समझना पड़ता है कि हम हैं ही भगवान। जरा सा स्वयं का पता लगा और दुनिया बदली। इसीलिए संतुलन जरूरी है संयम की अति से।

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवसः आखिर कब साकार होगा पूर्ण साक्षर भारत का सपना?

योगेश कुमार गोयल

हर व्यक्ति तक पहुंचनी चाहिए ज्ञान की रोशन... दुनियाभर में लोगों को साक्षरता के महत्व के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 8 सितम्बर को विश्वभर में 'अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस' मनाया जाता है। दुनिया से अशिक्षा को समाप्त करने के संकल्प के साथ आज 59वां 'अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस' मनाया जा रहा है। पहली बार यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन) द्वारा 17 नवम्बर 1965 को 8 सितम्बर को ही अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाए जाने की घोषणा की गई थी, जिसके बाद प्रथम बार 8 सितम्बर 1966 से शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने तथा विश्वभर के लोगों का इस ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रतिवर्ष इसी दिन यह दिवस मनाए जाने का निर्णय लिया गया। वास्तव में यह संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों का ही प्रमुख घटक है।

निरक्षरता को खत्म करने के लिए ईरान के तेहरान में शिक्षा मंत्रियों के विश्व सम्मेलन के दौरान वर्ष 1965 में 8 से 19 सितम्बर तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा कार्यक्रम पर चर्चा करने के लिए पहली बार बैठक की गई थी और यूनेस्को ने नवम्बर 1965 में अपने 14वें सत्र में 8 सितम्बर को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस घोषित किया। उसके बाद से सदस्य देशों द्वारा प्रतिवर्ष 8 सितम्बर को 'अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस' मनाया जा रहा है। साक्षरता दिवस के अवसर पर निरक्षरता समाप्त करने के लिए जन जागरूकता को बढ़ावा देने तथा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के पक्ष में वातावरण तैयार किया जाता है। यह दिवस लगातार शिक्षा को प्राप्त करने की ओर लोगों को बढ़ावा देने के लिए तथा परिवार, समाज और देश के लिए अपनी जिम्मेदारी को समझने के लिए मनाया जाता है।

दुनियाभर में आज भी अनेक लोग निरक्षर हैं और यह दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत, सामुदायिक तथा सामाजिक रूप से साक्षरता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए विश्व में सभी लोगों को शिक्षित करना ही है। साक्षरता दिवस के माध्यम से यही प्रयास किए जाते हैं कि इसके जरिये तमाम बच्चों, व्यस्कों, महिलाओं तथा वृद्धों को भी साक्षर बनाया जाए। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार दुनियाभर में फिलहाल करीब चार अरब लोग साक्षर हैं लेकिन विडम्बना यह है कि आज भी विश्वभर में करीब एक अरब लोग ऐसे हैं, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते। तमाम प्रयासों के बावजूद दुनियाभर में 77 करोड़ से भी अधिक युवा भी साक्षरता की कमी से प्रभावित हैं अर्थात प्रत्येक पांच में से एक युवा अब तक साक्षर नहीं है, जिनमें से दो तिहाई महिलाएं हैं। आंकड़े बताते हैं कि 6-7 करोड़ बच्चे आज भी ऐसे है, जो कभी विद्यालयों तक नहीं पहुंचते जबकि बहुत से बच्चों में नियमितता का अभाव है या फिर वे किसी न किसी कारणवश विद्यालय जाना बीच में ही छोड़ देते हैं। कोरोना काल में यह समस्या और ज्यादा गहरी हुई। करीब 58 फीसदी के साथ सबसे कम व्यस्क साक्षरता दर के मामले में दक्षिण और पश्चिम एशिया सर्वाधिक पिछड़े हैं।

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के लिए प्रतिवर्ष एक विशेष थीम चुनी जाती है और इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस की थीम है 'डिजिटल युग में साक्षरता को बढ़ावा देना', जो संचार को बेहतर बनाने और विविध संस्कृतियों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देने के लिए कई भाषाओं में शिक्षा प्रदान करने के महत्व पर जोर देती है। पिछले साल साक्षरता दिवस 'बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देनाः आपसी समझ और शांति के लिए साक्षरता' थीम के साथ मनाया गया था। इस विशेष दिवस के लिए 2006 से लेकर अब तक निर्धारित थीम पर नजर डालें तो 2006 में सामाजिक प्रगति प्राप्ति पर ध्यान देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस का विषय 'साक्षरता सतत विकास' रखा गया था। वर्ष 2007 और 2008 में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस की विषय-वस्तु 'साक्षरता और स्वास्थ्य' थी, जिसके जरिये टीबी, कॉलेरा, एचआईवी, मलेरिया जैसी फैलने वाली बीमारियों से लोगों को बचाने के लिए महामारी के ऊपर ध्यान केन्द्रित करने का लक्ष्य रखा गया था। वर्ष 2009 में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण पर ध्यान देने के लिए इसका विषय 'साक्षरता और सशक्तिकरण' रखा गया था जबकि 2010 की थीम 'साक्षरता विकास को बनाए रखना' थी। 2011 में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के लिए थीम 'साक्षरता और महामारी' (एचआईवी, क्षय रोग, मलेरिया आदि संक्रमणीय बीमारियों) पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए थी। 2012 में लैंगिक समानता और महिलाओं को सशक्त बनाने पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए थीम थी 'साक्षरता और सशक्तिकरण'। 2013 में शांति के लिए साक्षरता के महत्व पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए 'साक्षरता और शांति', 2014 में '21वीं शताब्दी के लिए साक्षरता', 2015 में 'साक्षरता और सतत विकास', 2016 में 'अतीत पढ़ना, भविष्य लिखना', 2017 में 'डिजिटल दुनिया में साक्षरता', 2018 में 'साक्षरता और कौशल विकास' अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस की थीम थी। 2019 में 'साक्षरता और बहुभाषावाद', वर्ष 2020 में 'कोविड-19 संकट और उससे संबंधित शिक्षा और शिक्षण', 2021 में 'मानव-केन्द्रित पुनर्प्राप्ति के लिए साक्षरताः डिजिटल विभाजन को कम करना' (लिटरेसी फॉर ए ह्यूमन-सेंट्रड रिकवरीः नैरोइंग द डिजिटल डिवाइड), 2022 में 'ट्रांसफॉर्मिंग लिटरेसी लर्निंग स्पेसेस' (साक्षरता सीखने के स्थान को बदलना) तथा 2023 में 'संक्रमण काल में दुनिया के लिए साक्षरता को बढ़ावा देनाः टिकाऊ और शांतिपूर्ण समाजों की नींव का निर्माण' (प्रोमोटिंग लिटरेसी फॉर ए वर्ल्ड इन ट्रांजिशनः बिल्डिंग द फाउंडेशन फॉर सस्टेनेबल एंड पीसफुल सोसायटीज) अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस की थीम थी।

बहरहाल, भारत हो या दुनिया के अन्य देश, गरीबी मिटाना, बाल मृत्यु दर कम करना, जनसंख्या वृद्धि नियंत्रित करना, लैंगिक समानता प्राप्त करना आदि समस्याओं के समूल विनाश के लिए सभी देशों का पूर्ण साक्षर होना बेहद जरूरी है। दरअसल साक्षरता ही सामाजिक विकास का आधार स्तंभ बन सकती है। साक्षरता में ही वह क्षमता है, जो परिवार और देश की प्रतिष्ठा बढ़ा सकती है। आंकड़े देखें तो दुनिया में 100 से भी अधिक देश अभी भी ऐसे हैं, जो पूर्ण साक्षरता हासिल करने के लक्ष्य से अभी दूर हैं और चिंता की बात है कि भारत भी इनमें शामिल है। हालांकि आजादी के बाद देश में साक्षरता दर काफी तेजी से बढ़ी है लेकिन अभी इस दिशा में बहुत किया जाना बाकी है।

(लेखक साढ़े तीन दशक से पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं)

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

बढ़ता जा रहा नशे का कारोबार... बड़े तस्करों पर नही हो रही कार्रवाई से हौंसले हो रहे बुलंद

सिर्फ माल ले जाने वाली छोटी मछलियों को पकड़कर हो रही इतिश्री...

नीमच (ऐश्वर्य शर्मा (पवन))। मालवा के नीमच मंदसौर क्षेत्र बड़े पैमाने पर हो रही अफीम-डोडाचूरा जैसे मादक पदार्थों की तस्करी का गढ़ बनता जा रहा है और सभी जिम्मेदार मूक दर्शक बन देख रहे है। जहाँ एक ओर पुलिस माल ले जाने वाली छोटी मछलियों को पकड़कर बड़ी सफलता बता देती है तो वहीं उन छोटी मछलियों को माल देने वाले मगरमच्छ पुलिस की पकड़ से कौसों दूर है। ऐसे बड़े बड़े मगरमच्छों ने क्षेत्र को अफीम डोडाचूरा तस्करी हब बना डाला है। इन लोगों ने माल ले जाने वाले हजारों लोगों के घर बर्बाद करवा कर खुद के आशियाने सजा डाले है। दोनों जिलों में मिलाकर हर एक दो दिन में कोई ना कोई डोडाचूरा या अफीम का केस बनता है, कभी आरोपी बनते है तो कभी आरोपी फरार हो जाते है। माल ले जाने वाले पकड़े भी जाते है तो उनको माल देने वाले पुलिस की पहुंच से दूर दिखाई देते है। यही सिलसिला निरंतर जारी है। बड़े बड़े तस्करों पर बड़ा एक्शन नही होने से ये लोग पैसे का लालच देकर रोज नया माल ले जाने वाला तैयार कर लेते है और अपने काम को अंजाम देते रहते है। ऐसे ही काला साम्राज्य अपनी जड़ें जमाकर बड़े पैमाने पर फलफूल रहा है। इन बड़े बड़े तस्करों तक पुलिस कार्रवाई की आंच तक नही पहुंच पाती है।

पूरे देश मे मालवा क्षेत्र जहां कृषि और औषधीय के लिए जितना प्रसिद्ध है वहीं यह इस तस्करी के काले साम्राज्य के लिए भी जाने जाने लगा है। इन सब मे जनप्रतिनिधियों की भूमिका भी अहम है, ये लोग सब मालवा को गर्त में जाते हुए चुपचाप आंखे बंद कर देख रहे है। जिस तरह से देश के गृहमंत्री अमित शाह ने मजबूत इच्छाशक्ति का प्रदर्शन करते हुए ऑपरेशन ऑलआउट चला कर देश से नक्सलियों के गढ़ों को नेस्तनाबूद कर दिया ऐसे ही इच्छाशक्ति यहां के जनप्रतिनिधियों में दिखाई दे तो इस काले साम्राज्य को खत्म किया जा सकता है। लेकिन क्षेत्र का एक भी नेता चाहे तो पक्ष का हो या विपक्ष का इसको लेकर कोई नही बोलता।

जिले के आई.टी.आई. में प्रवेश का अंतिम दिन आज

"पहले आओ पहले पाओं" के आधार पर मिलेगा प्रवेश

नीमच 9 सितम्बर । जिले के सभी आई.टी.आई.में प्रवेश के लिए ''पहले आओ, पहले पाओ'' राउंड के तहत नवीन रजिस्ट्रेशन, च्वाईस फिलिंग सुधार का अंतिम दिन आज 10 सितम्बर 2025 हैं। आवेदक द्वारा अधिकतम एक आई.टी.आई.के लिए एक च्वाईस फिलिंग करना अनिवार्य हैं। च्वाईस लॉक होने के पश्चात संशोधन संभव नहीं हैं। आवेदकों को सावधानीपूर्वक आई.टी.आई., एवं व्यवसाय का चयन करना चाहिए। आवेदक को च्वाईस लॉक करवाने के बाद अलॉटमेंट लेटर प्रिंट कर संबंधित आई.टी.आई.में प्रवेश हेतु सभी दस्तावेज की मूल प्रति एवं 2 सेट फोटोकापी सहित पहुँचकर, वेरिफिकेशन उसी दिवस करवाना होगा।

पूजन सामग्री उत्पादन करने वाली इकाईयाँ मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना का लाभ लें

नीमच 9 सितम्बर । प्रबंधक खादी ग्रामोद्योग नीमच ने बताया, कि प्रदेश में पूजन सामग्री उत्पादन करने वाली इकाईयों का प्रोत्साहित करने हेतु प्रदेश में सुक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विभाग द्वारा मुख्यमंत्री उद्यम कांति योजना के तहत ऐसी इकाईयों को बिना ग्यारंटी का ऋण एवं ब्याज सब्सिडी प्रदान की जा रही हैं। प्रदेश में पूजन सामग्री का उत्पादन करने वाली इकाईयों को उक्त योजना से लाभान्वित किया जा रहा हैं। इस योजना का संचालन जिला एवं व्यापार उद्योग केन्द्र द्वारा किया जा रहा हैं।

किसी प्रकार की समस्या होने पर नीमच जिले में मो.न.9926463087 पर सम्पर्क किया जा सकता हैं। पूजन सामग्री उत्पादन करने वाली इकाईयां अपना पंजीयन मुख्यमंत्री उद्यम कांति योजना में एम.पी.ऑनलाईन के माध्यम से करवाकर एक लाख से लेकर 50 लाख तक का बैंक द्वारा ऋण एवं 3 प्रतिशत ब्याज सब्सिडी का लाभ उठा सकते हैं।

उंगलियों के दूरी भी बताती है कैसा रहेगा जीवन

हाथ की रेखाओं के साथ आप उंगलियों से भी आप वर्तमान और भविष्य के बारे में जान सकते हैं। हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार,हस्तरेखा में उंगलियों की लंबाई के साथ उनकी बनावट और उनके बीच की दूरी भी इंसान के बारे में बता सकती है। अंगुलियों के बीच का अंतर भविष्य में क्या छिपा है यह बता सकता है।

लक्ष्य को लेकर होते है काफी गंभीर

हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार, तर्जनी यानी अंगूठे के पास वाली उंगली और मध्यमा यानी मीडिल फिंगर के बीच में खाली जगह है तो उस व्यक्ति के विचार स्वतंत्र होते हैं। वह आसानी से हर बात को कह देता है। अंगुलियों के बीच की ज्यादा दूरी है तो वह काफी मतलबी हो सकते हैं। हालांकि इस तरह के लोग अपने लक्ष्य को लेकर काफी गंभीर होते हैं और इनकी मेहनत भी काफी रंग लाती भी है।

ऐसे लोग केवल अपने फायदे सोचते हैं

हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार, मध्यमा यानी मिडिल फिंगर और अनामिका यानी रिंग फिंगर के बीच में दूरी नहीं होनी चाहिए। इन दोनो अंगुलियों का पास-पास होना शुभ माना जाता है। अगर इनके बीच में खाली जगह हो तो ऐसा व्यक्ति काफी लापरवाह माना जाता है। यह केवल अपने बारे में सोचते हैं।

परिवार के लिए करते हैं सभी कार्य

अनामिका यानी रिंग फिंगर और कनिष्ठा यानी सबसे छोटी उंगली के बीच की खाली जगह अशुभ मानी जाती है। ऐसे व्यक्ति बहुत क्रोधी होते हैं। यह अपने हक के लिए किसी भी स्तर पर जा सकते है, फिर यह गलत और सही नहीं देख पाते। जिनकी खाली जगह होती है, वह काफी सकारात्मक सोचते हैं और अपने परिवार की शांति के लिए सभी कार्य करते हैं।

बड़े पदों पर काम करते हैं ऐसे लोग

अगर तर्जनी यानी अगूंठे के पास वाली उंगली अनामिका यानी रिंग फिंगर से छोटी होती है। तो ऐसे व्यक्ति में अहं भाव, सम्मान पाने की इच्छा बहुत होती है। यदि यह ऊंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति उत्तरदायित्व वाले पदों यानी बड़े पदों पर काम करता है। अगर यह सामान्य से छोटी हो तो व्यक्ति में महत्वाकांक्षा की कमी होती है।

गंभीर स्वभाव के होते हैं ऐसे व्यक्ति

हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार, यदि किसी भी उंगलियों में फासला नहीं है तो ऐसे व्यक्ति काफी गंभीर स्वभाव के होते हैं। ऐसे लोग किसी से ज्यादा बात नहीं करते हैं, हमेशा अपने आप में रहते हैं। जिनकी सभी उंगलियों में फासला होता है ऊर्जावान होते हैं। इन लोगों की सोच काफी सकारात्मक होती है।

मनी प्लांट लगाते समय रखें यह ध्यान

यूं तो हर कोई मनी प्लांट अपने घर में लगाता है ताकि घर में आर्थिक रूप से संपन्नता हो लेकिन क्या आप जानते हैं कि गलत दिशा में रखा गया मनी प्लांट आपको तबाह कर सकता है। आर्थिक रूप से कंगाल बना सकता है। तो अगर आप भी ये पौधा अपने घर में लगाना चाहते हैं, तो पहले इन बातों को जान लें। इसके मुताबिक ही घर में मनी प्लांट लगाएं। इससे आपको काफी लाभ होगा।

जब भी घर में ये पौधा लाएं तो ध्यान रखें कि इसे आग्नेय दिशा यानी कि दक्षिण-पूर्व में ही लगाएं। बता दें कि इस दिशा के देवता गणेश जी है जो कि अमंगल नाशक हैं और प्रतिनिधि ग्रह है शुक्र जो कि सुख- समृद्धि दायक है। इस तरह आपको आग्नेय दिशा में मनी प्लांट लगाने से फायदा ही फायदा होगा।

वहीं अगर आपने इसे किसी और दिशा में या फिर नकारात्मक कही जाने वाली ईशान दिशा यानी कि उत्तर- पूर्व में रख दिया तो आपको हानि ही हानि होगी। इसके पीछे कारण यह है कि बृहस्पति जो कि देवताओं के गुरु हैं और शुक्र राक्षसों के गुरु हैं। दोनों ही एक-दूसरे के शत्रु हैं ओर ईशान का प्रतिनिधि ग्रह बृहस्पति है।

ऐसे में जब भी आप इस दिशा में मनी प्लांट लगाते हैं तो आपको नुकसान ही नुकसान होगा। तो जब भी आपको घर में मनी प्लांट का पौधा लगाना हो, ध्यान रखें कि उसकी दिशा आग्नेय हो। इससे आपको धन संबंधी लाभ तो मिलेगा ही साथ ही घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा।

पितृपक्ष में रखें इन बातों का ध्यान, पितृ होंगे प्रसन्न

पितृपक्ष शुरू हो गया है, इस समय लोग अपने पितरों को प्रसन्न करने के लिए कई तरह के उपाय करवाते हैं, तो आइए हम आपको कुछ उपाय बताते है जिनसे आपके पितृ प्रसन्न होकर आपको आर्शीवाद देंगे।

पितृपक्ष का महत्व

हमारे हिन्दू धर्म में पितृपक्ष विशेष महत्व रखता है। हमारे यहां मृत्यु उपरांत व्यक्ति का श्राद्ध करना आवश्यक होता है। ऐसी मान्यता है कि अगर किसी का श्राद्ध विधिपूर्वक नहीं हुआ तो उसकी आत्मा को शांति नहीं मिलती है। माना जाता है कि पितृपक्ष के दौरान यमराज पितरों को उनके परिजनों से मिलने के लिए मुक्त कर देते हैं। ऐसे में अगर पितृपक्ष में पितरों का श्राद्ध न किया जाए तो उनकी आत्मा दुखी होती है।

पितृपक्ष से जुड़ी पौराणिक कथा

एक पौराणिक कथा के अनुसार प्राचीन काल में जोगे और भोगे नामक के दो भाई रहते थे। जोगे बड़ा था और भोगे छोटा था। जोगे बहुत धनवान था लेकिन भोगे गरीब था। जोगे की पत्नी को अपना धनवान होने का बहुत अभिमान था लेकिन भोगे की पत्नी बहुत सरल थी। पितृपक्ष आने पर जोगे की पत्नी ने जोगे से पितरों का श्राद्ध करने को कहा लेकिन जोगे नही माना। लेकिन जोगे की पत्नी को लगा कि अगर श्राद्ध नहीं करेंगे तो समाज क्या कहेगा। इसलिए श्राद्ध करवाया और उसमें अपने मायके वालों को अपना धन दिखाने के लिए बुलाया। इस तरह जिस दिन श्राद्ध था उस दिन पितृ आए और उन्होंने देखा कि जोगे के घर उसके पत्नी के मायके वाले भोजन कर रहे हैं। यह देखकर पितृ बहुत दुखी हुए और भोगे के घर चले गए। भोगे के घर अगियारी निकली थी उसकी राख चाट कर पितृ चले गए।

उसके बाद सभी पितृ जब नदी किनारे इकट्ठे हुए तो जोगे और भोगे के पितृ बहुत दुखी हुए। उन्होंने सोचा कि अगर भोगे के पास धन होता तो वह जरूर हमारा श्राद्ध अच्छे से करता । इसलिए सभी पितृ भोगे को धन मिले कहकर नाचने लगे। इधर भोगे के घर में भोजन नहीं होने के कारण उसके बच्चे भूखे थे। उन्होंने खाने का मांगा तो उनकी मां ने ऐसे ही कह दिया कि जाओ बर्तन में रखा है कुछ लेकर खा लो। जब बच्चों ने बर्तन खोला तो देखा कि उसमें सोने की मुहरे रखी है। उन्होंने यह बात मां को बतायी। इसके भोगे की पत्नी ने पितरों का अच्छे से श्राद्ध किया और जेठ-जठानी को बुलाकर आवभगत की।

पितृ पक्ष में ये गलती न करें

पंडितों की मान्यता है कि पितृपक्ष में अपने पितरों का स्मरण करना चाहिए। यदि आप अपने पितरों को तर्पण करते हैं, तो ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करें। तर्पण के दौरान पानी में काला तिल, फूल, दूध, कुश मिलाकर पितरों का तर्पण करें। शास्त्रों का मानना है कि कुश का उपयोग करने से पितर जल्द ही तृप्त हो जाते हैं। पितृ पक्ष के दौरान आप प्रत्येक दिन स्नान के तुरंत बाद जल से ही पितरों को तर्पण करें। इससे उनकी आत्माएं जल्द तृप्त होती हैं और आशीर्वाद देती हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, पितृ पक्ष के दिनों में पितरों के लिए भोजन रखें। वह भोजन गाय, कौआ, कुत्ता आदि को खिला दें। पंडितों का मानना है कि उनके माध्यम से ये भोजन पितरों तक पहुंचता है।

किस दिन करें श्राद्ध

जिसकी मृत्यु तिथि का ज्ञान न हो उसका श्राद्ध अमावस्या को करना चाहिए। मृतक का श्राद्ध मृत्यु होने वाले दिन करना चाहिए। दाह संस्कार वाले दिन श्राद्ध नहीं किया जाता। अग्नि में जलकर, विष खाकर, दुर्घटना में या पानी में डूबकर, शस्त्र आदि से अल्पमृत्यु वालों का श्राद्ध चतुर्दशी को करना चाहिए, चाहे उनकी मृत्यु किसी भी तिथि में हुई हो। आश्विन कृष्ण पक्ष में सनातन संस्कृति को मानने वाले सभी लोगों को प्रतिदिन अपने पूर्वजों का श्रद्धा पूर्वक स्मरण करना चाहिए, इससे पितर संतुष्ट हो कर हमें दीर्घायु, आरोग्यता, पुत्र-पौत्रादि यश, स्वर्ग पुष्टि, बल, लक्ष्मी, स्थान, वाहन, सब प्रकार की समृद्धि सौभाग्य, राज्य तथा मोक्ष की प्राप्ति कराते हैं।

पितृपक्ष में निषेध हैं ये काम

1. नए कपड़े और नया सामान न खरीदें।
2. दरवाजे पर आए भिखारी और अतिथि का अपमान न करें।
3. बासी खाना न खाएं। साथ ही शराब और मांस का भी सेवन न करें।
4. पितृपक्ष में होने वाली पूजा में लोहे के बर्तन के स्थान पर हमेशा पीतल और तांबे के बर्तन का इस्तेमाल करें।
5. तेल और सजावट का सामान इस्तेमाल नहीं करें।
6. इस दौरान मसूर की दाल, अलसी, धतूरा, कुलथी और मदार की दाल का सेवन न करें।

इन कामों से होते हैं पितृ प्रसन्न

1. ब्राह्मणों को सम्मान पूर्वक बुलाकर भोजन कराएं। यह ध्यान रहे कि भोजन हमेशा दोपहर में ही कराएं, सुबह और शाम को देवताओं को समय होता है।
2. ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें मीठा जरूर खिलाएं। मीठा खाने से ब्राह्मण प्रसन्न होंगे और उससे पितृ खुश होंगे।
3. इसके अलावा आप गाय, कुत्ते और कौवों को भोजन करा सकते हैं। इन्हें भोजन कराएं बिना श्राद्ध अधूरा माना जाता है।

ये 10 चीजें हो तो माता लक्ष्मी कभी नहीं आती पास

व्यक्ति अपने परिवार की खुशी के लिए कड़ी मेहनत करता है ताकि उसके घर में हमेशा सुख और समृद्धि बनी रहे। लेकिन जाने-अनजाने कई बार कुछ छोटी-छोटी गलतियों की वजह से उनके ऊपर माता लक्ष्मी की कृपा नहीं हो पाती। वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में कई बार कुछ ऐसी चीजें होती हैं जिसकी हम अनदेखी कर देते हैं लेकिन यही अनदेखी नुकसान और परेशानी की वजह बन जाती है।

वास्तु शास्त्र में घर पर मकड़ी के जाले को अशुभ माना जाता है इसलिए मकड़ी का जाला घर में न लगने दें। इससे उलझन और परेशानी बढ़ती है।

टूटे हुए आईने से हमेशा नकारात्मक ऊर्जा निकलती रहती है इसलिए घर में जब भी कोई दर्पण या शीशा टूट जाए तो उसे घर से बाहर कर दें।

घर में चमगादड़ का प्रवेश अशुभ माना गया है। वास्तु विज्ञान के अनुसार घर में चमगादड़ का आना सूनेपन की निशानी है। घर में कुछ बुरी घटनाएं होने के संकेत होते हैं।

घर की दीवारों में दरारों का होना अशुभ होता है इसलिए जहां दरार हो उसकी मरम्मत करवाएं, दरार का होना धन के लिए अशुभ माना गया है क्योंकि माता लक्ष्मी उन्हीं घरों में वास करती है जहां पर साफ-सफाई होती है।

वास्तु शास्त्र में नल से पानी टपकते रहने को अशुभ माना गया है। नल से लगातार पानी टपकने से धन की हानि होती है। इसलिए जब भी नल से पानी टपकता हो तो उसकी मरम्मत तुरंत करवाएं।

घर की छत पर कबाड़ और बेकार की चीजों को एकत्र न होने दें।

पूजा घर या घर पर कभी भी में बासी फूल को इकट्ठा करके नहीं रखें।

घर में खराब पड़े बिजली के उपकरणों को नही रहने देना चाहिए।

घर में कबूतर का घोंसला बनाना वास्तु विज्ञान के अनुसार अशुभ चिन्ह है। माना जाता है इससे घर पर बड़ी मुसीबत आती है।

घर के दीवारों के कोने में अगर कोई मधुमक्खी या मकड़ी घर में छत्ता लगाए तो इसे हटा दें। इनका घर में होना अशुभ सूचक होता है।

घर की फ्लोरिंग के लिए रंगों का चुनाव सोच-समझकर करें

वास्तु के अनुसार अपने घर की फ्लोरिंग के लिए रंगों का चुनाव सोच-समझकर करें। क्योंकि रंग भी घर में भी रहने वाली सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा को प्रभावित करते हैं। घर में यदि सही रंगों का प्रयोग किया गया है तो घर में अच्छी ऊर्जा बनी रहती है।

पूर्व दिशा

पूर्व दिशा यदि ठीक हो तो घर के मुखिया पर भगवान इंद्र की कृपा रहती है। इसके अलावा यह दिशा भगवान सूर्य को भी समर्पित मानी गई है, इस दिशा में सही होने से समाज में मान-सम्मान बना रहता है। वास्तु के अनुसार इस दिशा का फर्श गहरे हरे रंग का होना चाहिए।

पश्चिम दिशा

शास्त्रों के अनुसार पश्चिम दिशा लक्ष्मीजी का निवास माना गया है। इसलिए इस दिशा का दोष मुक्त होना बहुत जरूरी है। इस दिशा में अच्छी साफ-सफाई रखनी चाहिए। इस दिशा में फर्श का रंग सफेद होना चाहिए और बहुत ज्यादा आकृति और डिजाइंस नहीं होना चाहिए।

उत्तर दिशा

घर की उत्तर दिशा बेहद महत्वपूर्ण होती है। वास्तु-शास्त्र के अनुसार केवल इस एक दिशा के सही होने से घर में खुशहाली आती है। वास्तु-शास्त्र के अनुसार उत्तर दिशा को धन-कुबेर का स्थान माना जाता है। इस दिशा में हमेशा गहरे काले रंग का पत्थर फर्श के तौर पर लगवाना चाहिए।

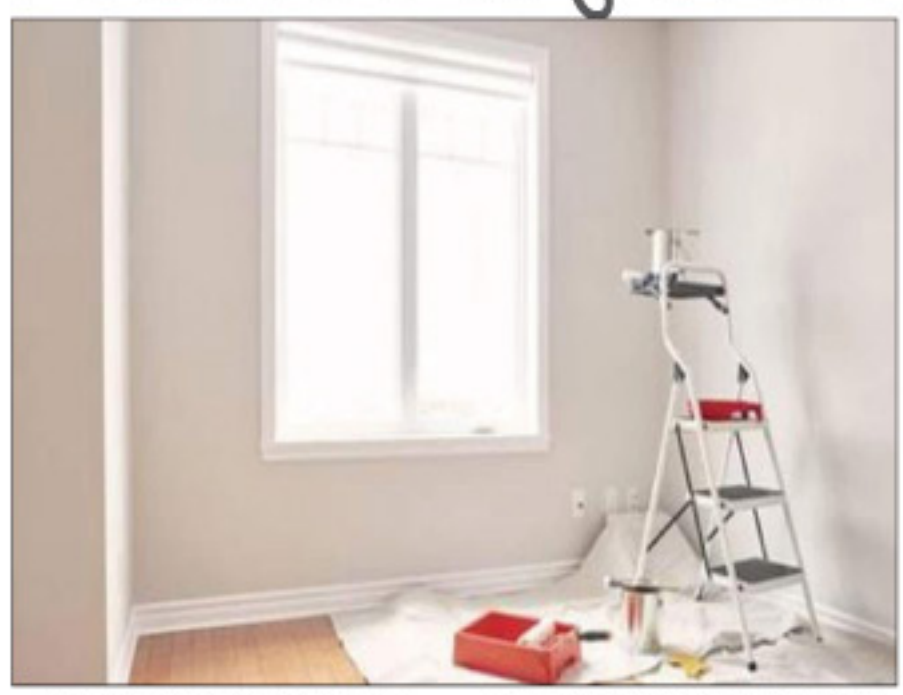

दक्षिण दिशा

वास्तु के अनुसार दक्षिण दिशा नर्क की दिशा मानी जाती है, इसलिए यह सलाह दी जाती है कि कभी भी इस दिशा में घर का प्रवेश द्वार नहीं होना चाहिए। न ही इस दिशा में शयन-कक्ष या पति-पत्नी का बेडरूम होना चाहिए। चूंकि इसे यम की दिशा मानी जाती है तो यहां के फर्श का रंग गहरा लाल होना चाहिए...।

उत्तर-पूर्व दिशा

उत्तर-पूर्व दिशा में भगवान शिव का वास माना गया है। शिवजी को आसमानी और नीला रंग बेहद पसंद है, इसलिए शिव पूजा में आसमानी रंगों का प्रयोग किया जाना शुभ माना गया है।

दक्षिण पूर्व

इस दिशा का सृष्टि के रचियता ब्रह्मा की दिशा माना गया है। इस दिशा में बैंगनी रंग का फर्श होना शुभ माना जाता है।

दक्षिण-पश्चिम दिशा

दक्षिण दिशा के स्वभाव से ठीक विपरीत दक्षिण पश्चिम दिशा का स्वभाव है। इस दिशा में हल्के रंगों का इस्तेमाल सही माना गया है। यहां हल्के गुलाबी रंग का फर्श ठीक माना गया है।

उत्तर-पश्चिम दिशा

घर की इस दिशा को वायु की दिशा माना जाता है। इसलिए इस दिशा की दीवारों, पर्दों और यहां तक फर्श का रंग भी ग्रे होना चाहिए। यह रंग इस दिशा के लिए सबसे शुभ माना गया है।

इन जानकारी के अनुसार अगर आप अपने घर का फर्श बनवाते हैं तो आपको घर वास्तुदोष से मुक्त रहेगा। लेकिन अगर किसी कारण से आपने किसी दिशा में गलत रंग का फर्श बनवा लिया है तो आप कमरों का उपयोग बदल सकते हैं। जैसे रसोईघर को शयन कक्ष बना लें या लिविंग एरिया को बेडरूम बनाकर घर को वास्तुअनुरूप बना सकते हैं।

पालक महासंघ ने किया 11 शिक्षकों का सम्मान

शिक्षक भावी राष्ट्र का निर्माता होता हैं- राकेश पप्पू जैन

नीमच । शिक्षक द्वारा प्रदत्त संस्कार समाज को एक नई दिशा देते हैं। शिक्षक के संस्कारों से ही संस्कृति और राष्ट्र का विकास होता है। शिक्षक अपने जीवन का अनमोल समय छात्र का जीवन चरित्र निर्माण करने में लगा देता है। शिक्षक भावी राष्ट्र का निर्माता होता है। यह बात पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष राकेश पप्पू जैन ने कहीं। वे पालक महासंघ मध्य प्रदेश जिला इकाई नीमच के तत्वाधान में अंबेडकर मार्ग स्थित अन्नपूर्णा सेवा न्यास सेवालय पर शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में 11 शिक्षकों के सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जीवन प्रेरणादाई रहा है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और श्री कृष्णा को भी गुरु ने ही महान बनने के संस्कार प्रदान किए थे। एक सामान्य बालक चंद्रगुप्त मौर्य को मगध का सम्राट चाणक्य के संस्कारों ने ही बनाया था। समाज में जागृति लाकर निर्धन बच्चों को अध्यापन कार्य से जोड़ना चाहिए हर व्यक्ति की सफलता में गुरु का ही मार्गदर्शन होता है। इस अवसर पर महिला प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष प्रियंका कविश्वर ने कहा कि गुरु और शिष्य के बीच सेतु का कार्य करता है। शिष्य कच्ची मिट्टी होता है गुरु का स्पर्श उसमें प्राण फूंक देता है। गुरु का स्पर्श शिष्य को अमृत बना देता है। लोहे में छिपे सोने को उजागर करने का कार्य गुरु रूपी पारसमणी करता है। गुरु के बिना शिष्य अधूरा रहता है। जिलाध्यक्ष जगदीश शर्मा ने कहा कि छात्रों और पालकों की समस्याओं के समाधान के लिए संगठन सभी के साथ मिलकर प्रयास रत है। इस अवसर पर गुणवंत गोयल, बालकृष्ण लक्ष्यकार, श्रीराम गौडबोले, वीरेंद्र सिंह ठाकुर, राधेश्याम शर्मा, नगर पालिका सभापति छाया जायसवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए ।

शिक्षक दिवस पर मप्र के शिक्षकों को मिला बड़ा तोहफा

सीएम ने की चौथे क्रमोन्नत वेतनमान की घोषणा

भोपाल । मप्र के शिक्षकों को चौथा क्रमोन्नति वेतनमान दिया जाएगा। सीएम डॉ. मोहन यादव ने भोपाल में शुक्रवार को राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में यह ऐलान किया है। सीएम ने कहा कि इससे 117 करोड़ का अतिरिक्त भार सरकार पर आएगा लेकिन इसमें भी हमें आनंद की अनुभूति होगी।

सरकार शिक्षकों के लिए हमेशा बेहतर काम करेगी। भोपाल के प्रशासन अकादमी में आयोजित कार्यक्रम में सीएम यादव ने कहा कि मप्र के सरकारी शिक्षक देश में मौजूद हर बोर्ड (सीबीएसई और आईसीएससी) को सीधी टक्कर दे रहे हैं। यही कारण है कि हमारे सरकारी स्कूलों के बच्चे देश में आयोजित होने वाली कठिन परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन कर रहे है। शिक्षकों के लिए जल्द ही कैबिनेट में प्रस्ताव लाकर चौथा समयमान वेतनमान लागू किया जाएगा। समारोह में प्रदेशभर से चयनित 14 उत्कृष्ट शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इन्हें 25 हजार रुपए की सम्मान निधि, शॉल, श्रीफल और प्रशस्ति पत्र दिए गए। कार्यक्रम के दौरान 55 लाख स्कूली छात्र-छात्राओं के खातों में 330 करोड़ रुपए यूनीफार्म के लिए ट्रांसफर किए गए।

1 जुलाई 2023 को जिन शिक्षकों को सेवा में 35 साल पूरे हो गए हैं, ऐसे करीब 1.50 लाख प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षकों को इस फैसले का लाभ मिलेगा। इन शिक्षकों ने 35 साल की सेवा तो पूरी कर ली है, पर पदोचति की पात्रता नहीं है इसलिए क्रमोन्नति वेतनमान दिया जा रहा है। जब शिक्षक पदोन्नति की पात्रता रखता है, तो उसे समयमान वेतनमान दिया जाता है।

फिलहाल, चौथा वेतनमान शिक्षा विभाग के अधिकारियों को मिल रहा था लेकिन शिक्षकों को नहीं। ऐसे में लंबे समय से इसकी मांग की जा रही थी। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा हर वर्ष दिए जाने वाले राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के लिए इस बार मध्यप्रदेश के दो शिक्षकों का चयन हुआ है। इनमें दमोह जिले के पथरिया विकासखंड की शासकीय प्राथमिक शाला की टीचर शीला पटेल और आगर-मालवा जिले के खेरिया गांव में शासकीय ईपीईएस माध्यमिक शाला के शिक्षक भैरूलाल ओसारा शामिल हैं। दोनों शिक्षकों को नई दिल्ली में आंयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सम्मानित किया।

पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राध्यापकों का हुआ सम्मान

नीमच । शिक्षक हमारे जीवन के शिल्पकार हैं। स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नीमच में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के द्वारा शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में महाविद्यालय के आध्यापकों का सम्मान कर शिक्षक दिवस मनाया गया ।

इस अवसर पर अतिथि के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रशांत मिश्रा, पूर्व प्राचार्य डॉ. एलएन शर्मा, वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. प्रभावती भावसार, समाजशास्त्र और समाज कार्य अध्यक्ष डॉ. संजय जोशी कामर्स संकायाध्यक्ष डॉ. सीपीपंवार, रासेयो के पूर्व कार्यक्रम अधिकारी डॉ जेसी आर्य एवं महाविद्यालय इकाई के रासेयो कार्यक्रम अधिकारी प्रो. राकेश कुमार कस्वां मंचासीन थे प्रारंभ में युवाओं के आदर्श स्वामी विवेकानंद एवं मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

रा.से.यो. के स्वयंसेवकों द्वारा परंपरागत कुमकुम तिलक से तथा उपारणा पहनाकर सभी प्राध्यापकों का स्वागत किया गया एवं पेन व मोमेंटो प्रदान कर सम्मान के भाव व्यक्त किये।

इस अवसर पर डॉ. प्रशांत मिश्रा ने गुरु की महता को बताते हुए जीवन में उसका स्थान सर्वोपरि बताया। डॉ. शर्मा ने गुरू के आशीर्वाद के महत्व पर प्रकाश डाला, डॉ. संजय जोशी ने शिक्षक को हमारे जीवन का शिल्पकार बताया, डॉ पंवार ने गुरू को जीवन का विश्राम स्थल कहा, डॉ. भावसार ने जीवन निर्माण और मंजिल तक पहुंचाने में शिक्षक के योगदान का महत्व बताया, प्रो आर्य ने समाज में शिक्षकों के प्रति मान सम्मान में आ रही कमी पर चिंता व्यक्त की।

स्वयं सेवकों ने शिक्षकों के प्रति अपने सम्मान के भाव व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन एवं व्यवस्थापन स्वयंसेवकों ने किया। कार्यक्रम समाप्ति पर स्वयंसेवक अंजलि ने सबका आभार व्यक्त किया।

किसी भी विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति का भुगतान लंबित ना रहे - डॉ.यादव

मुख्यमंत्री ने दिए अभियान चलाकर, पेंशन प्रकरणों के निराकरण के निर्देश

नीमच । मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने आज मंत्रालय में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समाधान ऑनलाइन में आए 12 जिलों के चिन्हित प्रकरणों पर आवेदकों से संवाद कर उनकी शिकायतों का निराकरण कराया।इस मौके पर मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाना एवं अन्य वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री

जी ने कहा कि आमजन की समस्याओं का समयबद्ध और पारदर्शी समाधान राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता हैं।

समाधान ऑनलाईन में मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने अभियान चलाकर, लंबित सभी पेंशन प्रकरणों का निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होने कहा, कि कोई भी पेंशन का प्रकरण लंबित ना रहे। जननी सुरक्षा योजना के हितग्राहियों को समय पर लाभ मिलना चाहिए। उन्होने अभियान चलाकर जननी सुरक्षा योजना एवं प्रसुति सहायता योजना के लंबित प्रकरणों के निराकरण के निर्देश दिए। नीमच में एन.आई.सी.कक्ष में आयोजित इस वीडियों कांफ्रेसिंग में कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा, एस.पी.श्री अंकित जायसवाल, जिला पंचायत सी.ई.ओ.श्री अमन वैष्णव, एडीएम श्रीमती लक्ष्मी गामड़, श्री बी.एस.कनेश सहित विभिन्न विभागों के जिला अधिकारी भी उपस्थित थे।

सीएम के मंदसौर दौरे की तैयारी शुरू

मन्दसौर । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 12 सितंबर को मंदसौर जिले के मल्हारगढ़ का दौरा करेंगे। इस दौरे की तैयारियों को लेकर कलेक्टर अदिति गर्ग और एसपी विनोद कुमार मीणा ने मल्हारगढ़ कॉलेज मैदान का दौरा किया।

अधिकारियों ने सभास्थल पर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने पार्किंग, मंच निर्माण और आम लोगों की सुविधाओं को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। भाजपा जिला अध्यक्ष राजेश दीक्षित भी इस दौरान मौजूद रहे।

भाजपा पदाधिकारियों ने कार्यकर्ताओं से सभा में बड़ी संख्या में पहुंचने का आग्रह किया। यह सभा जिले की राजनीति और विकास योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है। निरीक्षण के समय मंडल अध्यक्ष आशीष विजयवर्गीय, भाजपा महामंत्री मनीष चौहान, नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि योगेश कछावा और अनिल यति सहित अन्य पदाधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

12th के बाद सफर जोश का मंजिल कामयाबी की
MPPSC, SSC, BANK
रेलवे, पुलिस की तैयारी कीजिए
और डिप्टी कलेक्टर, तहसीलदार, वाणिज्यिक कर अधिकारी,
SP, DSP, CID इंस्पेक्टर, CBN इंस्पेक्टर, असिस्टेंट कमाण्डेंट,
इन्कम टेक्स इंस्पेक्टर, सब इंस्पेक्टर,
बैंक क्लर्क, PO, मैनेजर आदि बनिये
सोनी कोचिंग क्लासेस
ISO 9001 : 2008 Certified
22 वर्षों का अनुभव।
1200 से अधिक छात्रों को नौकरी दिला चुके हैं।
धनीराम सगर मार्केट, गायत्री मंदिर के पास,
भागेश्वर मंदिर रोड,नीमच मो. 9300905061

मुख्यमंत्री ने की पर्यावरण विभाग की गतिविधियों की समीक्षा

पर्यावरण की स्वच्छता के लिए समाज और सरकार करें साझा प्रयास : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

स्वच्छ पर्यावरण से ही स्वस्थ और समृद्ध बनेगा मध्यप्रदेश

भोपाल । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पर्यावरण की शुचिता बनाये रखना हम सभी का सामूहिक दायित्व है। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण से ही प्रदेश के हर नागरिक का जीवन स्वस्थ और समृद्ध बनेगा। उन्होंने निर्देश दिए कि पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी विभाग आपसी सामंजस्य और सहयोग के साथ कारगर कदम उठाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल एवं वायु की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाए। इन दो विशेष घटकों की शुद्धता पर ही संपूर्ण पर्यावरण की स्वच्छता निर्भर है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोमवार को मंत्रालय में पर्यावरण विभाग की गतिविधियों की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उज्जैन और जबलपुर में जू कम रेस्क्यू सेंटर की स्थापना होनी है। इस कार्य में गति लाएं और जल्द से जल्द इस कार्य को अंजाम दिया जाए। उन्होंने जोर देकर कहा कि पर्यावरण की शुद्धता से ही हम सबका जीवन सुरक्षित रह सकता है और यह संदेश समाज तक भी पूरी जिम्मेदारी से पहुंचना चाहिए। उन्होंने कहा कि पर्यावरण की बेहतरी केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि समाज को भी आगे आना होगा। समाज और सरकार के साझा प्रयास ही पर्यावरण को स्वच्छ और संरक्षित बनाए रख सकते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि बड़े तालाब में डल झील की तरह शिकारे चलाने की कार्यवाही जल्द से जल्द पूरी की जाए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन एक वृहद विषय है। इसके लिए कार्ययोजना बनाकर लक्ष्य आधारित कार्य किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि भोपाल, इंदौर, उज्जैन एवं ग्वालियर के अलावा जबलपुर, रीवा, सागर एवं खजुराहो में भी हीट कंट्रोल के लिए एक्शन प्लान बनाकर उसे क्रियान्वित किया जाए। मुख्यमंत्री ने हर्ष जताते हुए कहा कि प्रदेश में अमरकंटक, पचमढ़ी और पन्ना पहले से ही यूनेस्को बायोस्फियर रिजर्व घोषित हैं। इसके अलावा अब कान्हा, पेंच एवं बांधवगढ़ को भी यूनेस्को बायोस्फियर रिजर्व घोषित कराने के लिए समुचित कार्यवाही की जाए।

अपर मुख्य सचिव वन एवं पर्यावरण श्री अशोक वर्णवाल ने भोपाल के शाहपुरा क्षेत्र में करीब 100 हेक्टेयर क्षेत्र में स्टेट ऑफ द आर्ट के सहयोग से बॉयो डायवर्सिटी पार्क की स्थापना करने की विभागीय योजना की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह संभवतः देश का पहला बॉयो डायवर्सिटी पार्क होगा। यह अहम जानकारी मिलने पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इसे देश का मॉडल बॉयो डायवर्सिटी पार्क बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि भोपाल शहर को जैव विविधता के संरक्षण के मामले में एक नई पहचान देने वाले इस नवाचार के लिए सभी कार्यवाहियां तेजी से पूरी की जाएं।

बैठक में अपर मुख्य सचिव वन एवं पर्यावरण श्री वर्णवाल ने बताया कि बड़े तालाब में अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही मानसून अवधि के बाद की जाएगी। उन्होंने बताया कि प्रदेश में प्रदूषण फैलाने वाले अर्थात् लाल श्रेणी के उद्योगों की संख्या घट गई है, इससे पर्यावरण और बेहतर हुआ है। उन्होंने बताया कि नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम के तहत प्रदेश के पहले से शामिल 7 शहरों के अलावा 3 नए शहरों मंडीदीप, सिंगरौली और पीथमपुर को भी इस प्रोग्राम में शामिल करने के लिए केन्द्र सरकार को प्रस्ताव भेज दिया गया है। इस पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उज्जैन स्थित विक्रम उद्योगपुरी में भी प्रदूषण नियंत्रण के लिए विशेष कार्ययोजना बनाई जाए। उन्होंने बताया कि पिछले छह माह में विभाग द्वारा यूनियन कार्बाइड के अपशिष्ट का सुरक्षित रूप से भस्मीकरण कराया गया। रियल टाइम क्रॉप बर्निंग मॉनीटरिंग के लिए एक सॉफ्टवेयर विकसित कर इसका डाटा पब्लिक पोर्टल पर प्रसारित किया गया। प्रदेश के सभी जिलों के लिए राज्य पर्यावरण योजना एवं जिला पर्यावरण योजना का अपडेट पोर्टल उपलब्ध कराया गया। उन्होंने बताया कि प्रदेश में प्रदूषणकारी उद्योगों एवं संक्रामक कचरे (बॉयो मेडिकल वेस्ट) के समुचित निपटान के लिए हर माह एक सप्ताह में विशेष अभियान चलाया जाएगा, गड़बड़ी मिलने पर संबंधितों पर कार्यवाही भी की जाएगी।

अपर मुख्य सचिव वन एवं पर्यावरण श्री वर्णवाल ने बताया कि मध्यप्रदेश राज्य वेटलैण्ड प्राधिकरण के अंतर्गत जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के माध्यम से प्रदेश की 5 रामसर साइट क्रमशः भोज वेटलैण्ड भोपाल, सिरपुर, यशवंत सागर इंदौर, तवा जलाशय नर्मदापुरम एवं साख्य सागर शिवपुरी में उपलब्ध सभी जैव विविधताओं का सर्वे कर विधिवत दस्तावेजीकरण किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि हरित मध्यप्रदेश मिशन के तहत विभाग अगले तीन माह में एक मिशन डाक्यूमेंट तैयार कर शासन को प्रस्तुत करेगा। इस पर मुख्यमंत्री ने कहा कि इस मिशन में पर्यावरण विभाग के साथ-साथ वन एवं कृषि विभाग को भी जोड़ा जाए। मुख्यमंत्री ने कहाकि प्रदेश में करीब 247 नदियां हैं, इन सभी नदियों का भी दस्तावेजीकरण कराया जाए।

बैठक में वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री श्री दिलीप अहिरवार, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव नगरीय विकास एवं आवास श्री संजय दुबे, अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री नीरज मंडलोई, अपर मुख्य सचिव गृह श्री शिव शेखर शुक्ला सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

आज ही बुक करें अपना Zelo इलेक्ट्रिक स्कूटर, घर ले जाए
मात्र रु 45990/- रु 38,990/-
में वो भी 1 साल की बैटरी वारंटी के साथ
मात्र रू.38,990/- से इलेक्ट्रिक स्कूटर की रेंज से शुरु ...

RTO मॉडल मात्र
रु 81000/- रु 76000/-*
(माइलेज 80-100 कि.मी.) 3 साल बैटरी की वारंटी
के साथ, आज ही बुक करवाए और पाए एक सोने का सिक्का।
Zelo Electric Scooter
बंगला नं. 23, IDBI बैंक के सामने,
Lic रोड़, नीमच (म.प्र.)
मो. 9407423999, 8770664866

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक ऐश्वर्य शर्मा के लिए माँ भगवती प्रिन्टर्स बंगला नं. 23, आईडीबीआई बैंक के सामने, नीमच, जिला-नीमच, मध्यप्रदेश से मुदित एवं प्रकाशित। सम्पर्क: 9407423966। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नीमच होगा।